साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2555, आश्विन पूर्णिमा, 11 अक्तूबर, 2011 वर्ष 41 अंक 4

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

सीलं समाधि पञ्ञा च, विमुत्ति च अनुत्तरा।
अनुबुद्धा इमे धम्मा, गोतमेन यसस्सिना॥
-- दी० नि० २.३.१८६, महावग्गो.

– यशस्वी गौतम ने शील, समाधि, प्रज्ञा और विमुक्ति - इन चार धर्मों का प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया है।

शील-समाधि-प्रज्ञा

भगवान बुद्ध के जीवनकाल में तो उनके सिखाये हुए सार्वजनीन धर्म का विकास हुआ ही परंतु इसके बाद भी लगभग चार सौ वर्ष तक बिना किसी सामूहिक विरोध के इसका विकास होता ही रहा।

यदि वे अपनी शिक्षा को धर्म न कहकर बौद्धधर्म कहते तो वह भी एक संप्रदाय बनकर रह जाती और सांप्रदायिकता की सभी खामियां इसमें समा जातीं।

भिन्न-भिन्न संप्रदायों की भिन्न-भिन्न दार्शनिक मान्यताएं, कर्मकांड, वेश-भूषा, पर्व-उत्सव, तीज-त्योहार आदि होते हैं। संप्रदायवादी इन्हें ही अपना-अपना धर्म कहते हैं। इन भिन्न-भिन्न धर्मों को लेकर वे परस्पर एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते हैं, निंदा करते हैं और कटु-वचनों से औरों के हृदय को तीर की भांति बींधने का काम करते हैं। जैसे जन्म पर आधारित जात-पांत की ऊंच-नीच मान्यता समाज में विभाजन पैदा करती है, वैसे ही भिन्न-भिन्न संप्रदायों के मतभेद द्वेष-दुर्भावनाएं पैदा करके विभाजन करते हैं। इससे पारस्परिक स्नेह-सद्भावना नष्ट हो जाती है। इसके विरुद्ध भगवान ने जो सार्वजनीन धर्म सिखाया वह सबका होने के कारण तोड़ने का नहीं जोड़ने का काम करता है। इस सच्चाई को लोगों ने समझा। अतः बुद्ध की शिक्षा का निर्विरोध फैलाव होने लगा। इसका प्रभाव बढ़ने लगा और विकास होता गया।

भगवान स्वयं शील, समाधि, प्रज्ञा का अभ्यास कर भवमुक्त हुए, सम्यक-संबुद्ध बने और लोगों को भी शील, समाधि, प्रज्ञा के आर्य अष्टांगिक मार्ग का अभ्यास करना सिखाया, जो सबका धर्म है। किसी एक संप्रदाय तक सीमित नहीं है।

शील : शरीर और वाणी से कोई ऐसा काम नहीं करे जिससे औरों की हानि हो, उनकी सुख-शांति भंग हो। शील की यह शिक्षा सभी संप्रदाय वालों को मान्य थी। शील की इस शिक्षा को भगवान गहराइयों तक ले गये। उन्होंने सिखाया कि मन दूषित हो तो शरीर और वाणी से दुष्कर्म होते ही रहते हैं क्योंकि उनकी उत्पत्ति तो मन से ही होती है। यदि मन मैला हो तो शरीर और वाणी से दुष्कर्म हो ही जाता है। अतः भगवान ने निर्मल चित्त से शील पालन करना सिखाया। इसका भला कोई क्या विरोध करता?

समाधि : जैसे आज वैसे ही उन दिनों भी किसी मंत्र-जाप अथवा किसी आकृति या रंग-रूप के ध्यान से मन को एकाग्र किया जाता रहा होगा। इससे कुछ अंशों में मन का ऊपरी-ऊपरी हिस्सा एकाग्र हो जाने से निर्मलता और शांति प्राप्त होती है परंतु जब मन की गहराइयों में दबा हुआ विकार ऊपर उभर कर आता है तब सारे मानस को मलीन कर देता है, समाधि मंद हो जाती है। भगवान ने संपूर्ण चित्त की निर्मलता के आधार पर की गयी समाधि को ही सम्यक कहा और सिखाया। तब इसका लोग कैसे विरोध करते?

प्रज्ञा : प्रज्ञा का उपदेश सुन ले तो यह श्रुत प्रज्ञा हुई। उस पर चिंतन-मनन भी कर ले तो यह चिंतन प्रज्ञा हुई। ये दोनों ही सही मायने में प्रज्ञा नहीं हैं। अपने भीतर की सच्चाई को स्वानुभूति द्वारा स्वयं जान कर अपना ज्ञान जगाये तभी प्रज्ञा सही होती है। स्वयं अपनी अनुभूति द्वारा प्राप्त ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान है। इस सच्चाई को भी लोगों ने समझा तो कैसे विरोध करते?

अध्यात्म जगत के इस महान वैज्ञानिक तपस्वी सिद्धार्थ गौतम ने चित्त को परिपूर्ण रूप से शुद्ध करने की इस अनजानी सच्चाई को खोजकर प्रकाशित किया। इस खोज में सही वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करते हुए शरीर और चित्त तथा उनके पारस्परिक संबंधों की सच्चाई को जानने के लिए उनका विभाजन-विघटन करते-करते, उन्हें पूर्णतया जान लिया। यह भी जान लिया कि मानस में विकारों का आगमन और संवर्धन कैसे होता है और कैसे विपश्यना विद्या द्वारा नितांत समता को पुष्ट करते हुए उनका क्षय किया जा सकता है। जब तक विकारों का पूर्ण क्षय न हो जाय तब तक जितना-जितना क्षय हुआ उतनी-उतनी उनसे मुक्ति मिली और उतनी-उतनी दुःख-विमुक्ति। इसका भला कोई कैसे विरोध करता?

भगवान बुद्ध की यह वैज्ञानिक और प्रत्यक्ष फलदायिनी विद्या लोग स्वीकारते गये और लाभान्वित होते गये। इस प्रकार सरलता से इसका विकास होता गया। चार सौ वर्ष बाद सम्राट अशोक ने इस विद्या को सारे भारत में ही नहीं, बल्कि अनेक

पड़ोसी देशों में भेजा और लोगों का कल्याण किया। इसके बाद दुर्भाग्य से भारत में यह विद्या पूर्णतया नष्ट हो गयी। लेकिन अब दो हजार वर्ष के बाद यह पुनः लौटी है और सारे विश्व में फैल रही है। विश्वास है आगामी ढाई हजार वर्षों तक यह विद्या अपने शुद्ध रूप में कायम रहेगी और जनकल्याण करती रहेगी।

इस विद्या से भारत तथा समस्त संसार का मंगल हो, कल्याण हो!

कल्याणमित्र,

स. ना. गोयन्का

एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सूचना

परम आदरणीय भदंत लैडी सयाडोजी का यह सुदृढ़ विश्वास था कि द्वितीय बुद्धशासन के प्रारंभ होने पर बुद्ध की शिक्षा बर्मा से भारत लौटेगी और चिरकाल तक लोककल्याण करती रहेगी। परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन का भी यही मत था कि बुद्ध की शिक्षा द्वितीय बुद्धशासन तक यानी आगे पच्चीस सौ वर्षों तक शुद्ध रूप में सारे विश्व में जीवित रहेगी। इसी उद्देश्य से उन्होंने गुरुदेव गोयन्काजी को भारत भेजा। श्री गोयन्काजी का भी यही दृढ़ विश्वास है कि बुद्ध की शिक्षा द्वितीय बुद्धशासन तक अपने शुद्ध रूप में सारे विश्व में जीवित रहेगी। इस निमित्त उन्होंने काम करना आरंभ किया।

परियत्ति -- यानी भगवान बुद्ध की वाणी एवं तत्संबंधी पालि साहित्य। श्री गोयन्काजी ने भारत आकर छट्ठ संगायन में स्वीकृत हुई तिपिटक और तत्संबंधित सारे पालि साहित्य को देवनागरी लिपि में पुस्तकाकार प्रकाशित कराया। फिर विश्व की अनेक लिपियों में लिप्यन्तरित करके इसकी सी. डी. बनवायी और अब इसे इंटरनेट पर निवेशित करा दिया। अतः अब सदियों तक इसके शुद्ध रूप में कायम रहने में कोई संदेह नहीं।

पटिपत्ति -- यानी विपश्यना का काम उन्होंने भारत आते ही शुरू कर दिया। पिछले इकतालीस वर्षों में यहीं नहीं, बल्कि विश्व के दूर-दूर देशों में विपश्यना अपने शुद्ध रूप में फैल गयी और फैलती ही जा रही है। इसे विभिन्न संप्रदाय के लोगों ने स्वीकार किया है क्योंकि यह सांप्रदायिकताविहीन है, अंधविश्वासों और अंधमान्यताओं से सर्वथा मुक्त है, वैज्ञानिक है और आशुफलदायिनी है।

इसे शुद्ध रूप में प्रसारित करने के लिए उन्होंने लगभग १,२०० सहायक आचार्य प्रशिक्षित किये हैं। भविष्य में और भी होते रहेंगे। अब तक विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में १६२ स्थायी निवासीय विपश्यना केंद्र स्थापित हो चुके हैं। भविष्य में और अधिक होते ही जायेंगे। इससे पटिपत्ति का प्रचार-प्रसार आगामी दो-ढाई हजार वर्षों तक निश्चित रूप से हो सकेगा।

भगवान की शिक्षा को नितांत शुद्ध रखने के लिए विपश्यना के आचार्यों, विपश्यना-केंद्रों और पगोडा के ट्रस्टियों के लिए निम्नलिखित नियम बनाये गये हैं जो कि अब भी और भविष्य में भी लागू रहेंगे --

(१) भगवान बुद्ध के समय से चली आ रही कल्याणी विपश्यना विधि की शुद्धता कायम रखें। इसमें किसी प्रकार का भी कोई सम्मिश्रण न हो।

(२) अन्य किसी प्रकार की साधना की निंदा न करें; परंतु उससे पूर्णतया विरत रहें।

(३) वे किसी भी राजनैतिक पार्टी के प्रति सहानुभूति भले रखें पर राजनीति में सक्रिय भाग कदापि न लें।

(४) सभी आचार्यों तथा ट्रस्टियों की अपनी-अपनी स्वतंत्र आजीविका हो ताकि वे किसी केंद्र पर अथवा पगोडा पर आश्रित न हों। जो दान मिले उसमें से अपने लिए एक पैसा भी न लें। सारा संबंधित ट्रस्ट के हवाले कर दें।

(५) विपश्यना केंद्रों में सम्मिलित होने वाले तथा पगोडा में प्रवेश करने वाले लोगों में रंचमात्र भी भेदभाव न किया जाय। मनुष्य मनुष्य हैं। विपश्यना उनमें कोई भेदभाव करना नहीं सिखाती।

(६) पगोडा में आने वालों से कोई प्रवेश-शुल्क नहीं लिया जाय। केंद्रों में सम्मिलित होने वालों से प्रशिक्षण का तो दूर, निवास, भोजन इत्यादि का भी कोई शुल्क न आज लिया जाय और न ही कभी भविष्य में। कोई साधक स्वेच्छापूर्वक प्रसन्नचित्त से दान दे तो वह अवश्य स्वीकार करें।

विश्व विपश्यना पगोडा -- तीसरा महत्त्वपूर्ण कार्य जो गुरुदेव श्री गोयन्काजी ने भारत तथा विश्वव्यापी साधकों की सहायता से कराया -- वह है इस महान पगोडा का निर्माण।

इसका एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है कृतज्ञता-ज्ञापन। एक तो सयाजी ऊ बा खिन के प्रति, जिन्होंने यह कल्याणकारी विद्या म्यंमा (बर्मा) से भारत भेजी और दूसरी ब्रह्मदेश के प्रति, जिसने २,००० वर्षों तक सम्राट अशोक से प्राप्त इस विद्या को और बुद्धवाणी को शुद्ध रूप में संभाल कर रखा। इसलिए म्यंमा के महत्त्वपूर्ण उपकार को कभी न भूलें। पगोडा ही नहीं, बल्कि इसके सारे परिसर में बर्मी संस्कृति, वास्तुकला, चित्रकला का ज्ञापन किया गया है। इनमें भी अभी या भविष्य में, कुछ भी जोड़-तोड़ करके किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा।

इस पगोडा का एक अन्य उद्देश्य है विपश्यना का शुद्ध प्रचार-प्रसार। श्री गोयन्काजी इसके प्रचार के लिए कीमत चुकाकर किसी प्रेस अथवा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सहयोग नहीं लेते और न ही भविष्य में कभी लिया जायगा। कोई मीडिया स्वेच्छा से विपश्यना के बारे में सही सूचना दे तो भले दे। जब उपरोक्त प्रकार से सही प्रचार-प्रसार न होता हो तब यह पगोडा ही विपश्यना के प्रसार का सही माध्यम बनेगा। इस पगोडा पर आने वालों को विपश्यना-संबंधी सूचना मिलेगी। उनमें से कुछ प्रभावित होकर किसी विपश्यना शिविर में अवश्य सम्मिलित होंगे और उसका लाभ लेंगे। बाकियों को विपश्यना का संदेश तो मिलेगा ही।

आर्थिक सहायता -- जो भी विपश्यना केंद्र अब हैं या भविष्य में बनेंगे, उनमें साधक दस दिन अथवा उससे अधिक दिनों तक साधना करके लाभान्वित होते हैं, होते रहेंगे। ऐसे श्रद्धालु साधक/साधिकाओं में से अनेक अब भी दान देते हैं और भविष्य में भी देते रहेंगे। ऐसे दान से आज के और भविष्य के सभी केंद्रों का संचालन सुविधापूर्वक होता रहेगा।

परंतु पगोडा में अब भी कोई प्रवेश-शुल्क नहीं लिया जाता और न ही भविष्य में कभी लिया जायगा। यहां सक्रिय रूप से कोई साधना-विधि भी नहीं सिखायी जाती, जिससे लाभान्वित होकर कोई श्रद्धापूर्वक दान दे। ऐसी परिस्थिति में आज भी और भविष्य में भी, पगोडा की देखभाल के लिए आर्थिक संकट उत्पन्न होने की आशंका है और इसकी पवित्रता नष्ट होने की भी।

पगोडा की अत्यंत सुंदर और आकर्षक बनावट के अतिरिक्त इसमें जो दस हजार लोगों के एक साथ बैठने के लिए बिना खंभों वाला विशाल ध्यानकक्ष बना हुआ है, वह लोगों को आकर्षित करेगा ही। वे इसका प्रयोग अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, सांप्रदायिक, राजनैतिक आदि भिन्न-भिन्न आयोजनों के लिए प्रयोग करना चाहेंगे। इस निमित्त वे बहुत ऊंचा किराया देने का भी प्रलोभन देंगे। इस दूषित प्रलोभन से आज के तथा भविष्य के ट्रस्टियों को भी बचकर रहना आवश्यक होगा, ताकि न केवल अब बल्कि भविष्य में भी धन के अभाव में पगोडा की पवित्रता नष्ट न हो जाय। ऐसी स्थिति में पगोडा के रख-रखाव, मरम्मत, बिजली, पानी इत्यादि तथा अन्य प्राबंधिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रति माह लाखों की राशि का आवश्यक धन कहां से आयगा? इसे ध्यान में रखते हुए ही यह निर्णय किया गया कि एक 'स्थायी धनराशि' (corpus fund) का गठन किया जाय, जिसके ब्याज से अब तथा भविष्य में भी इन आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे।

जैसे इस विशाल, भव्य विश्व विपश्यना पगोडा के निर्माण के लिए भारत के ही नहीं, बल्कि विश्व भर के हजारों साधकों का सहयोग प्राप्त हुआ वैसे ही इस महत्त्वपूर्ण 'स्थायी धनराशि' (corpus fund) के गठन में भी सब का सहयोग होगा ही।

अपने यहां बड़ी संख्या में विपश्यना शिक्षक, पगोडा तथा विपश्यना केंद्रों के ट्रस्टी हैं और उनसे कहीं अधिक भारत तथा विश्व भर में फैले विपश्यी साधक तथा साधिकाएं हैं। इनमें से किसी को भी पूज्य गुरुजी द्वारा पगोडा के लिए प्रस्तावित 'स्थायी धनराशि' के गठन का सुझाव उचित लगे तो वह श्रद्धा और कृतज्ञता के भाव से अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अनुसार इस योजना को आगे बढ़ाने में सहयोग दे सकता है। कोई व्यक्ति अपनी सहयोग राशि सीधे मुंबई न भेज सके तो वह स्थानीय विपश्यना केंद्र में यह लिखकर भेज दे कि यह दान 'विश्व विपश्यना पगोडा' की 'स्थायी धनराशि' के लिए है।

उदारचित्त दानियों के सहयोग से इस आवश्यक 'स्थायी धनराशि' के गठन की पूर्ति अवश्य होगी। इनमें से कोई चाहें तो माहवार अपनी सुविधानुसार कम या अधिक राशि लंबे समय तक किश्तों में भी दे सकते हैं। इस महान धर्मयज्ञ में प्रत्येक व्यक्ति की ओर से जो धर्माहुति दी जायगी, वह दीर्घकाल तक अनेकों के लिए कल्याणकारिणी सिद्ध होगी।

अपनी परंपरा के अनुसार जैसे शिविरों में केवल आवश्यकता सूचित की जाती है और इस पर जो दान दे या न दे, उसका नाम कभी प्रकाशित नहीं होता। यहां भी इस परंपरा के नियम का दृढ़तापूर्वक पालन किया जायगा।

एक और बात सभी दानियों को समझ लेनी चाहिए कि इस राशि का एक पैसा भी पगोडा के रख-रखाव और प्राबंधिक व्यवस्थाओं के अतिरिक्त अन्य किसी भी काम में बिल्कुल नहीं लगेगा। गुरुदेव इसका प्रपुष्ट प्रामाणिक न्यायिक प्रबंध करवा रहे हैं।

महाबोधि सोसायटी के पूर्व अध्यक्ष भदंत विपुलसारजी महाथेर तथा श्रीलंका की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती सिरिमाओ आर. डी. भण्डारनायके एवं बर्मा के परिनिर्वाण प्राप्त अरहंत आदरणीय भिक्षुप्रवर वैबू सयाडोजी ने भगवान बुद्ध की जो पावन धातुएं हमें दी हैं वे सभी सम्मानपूर्वक इस महत्त्वपूर्ण पगोडा में संनिधानित की जा चुकी हैं। गुरुदेव को यह पूर्ण विश्वास है कि इन धातुओं से पवित्र हुआ यह भव्य पगोडा इन पावन धातुओं को आगामी २,५०० वर्षों तक अक्षुण्ण रखने के लिए कायम रहेगा और धर्म के जाज्वल्यमान प्रतीक स्वरूप भगवान बुद्ध की पावन शिक्षा का संदेश देता रहेगा तथा अनेकों को इससे लाभान्वित होने की प्रेरणा देता रहेगा।

स्थायी धनराशि के संग्रह का यही उद्देश्य है।

सबके प्रति गुरुदेव की असीम मंगल-मैत्री।

निवेदक,

धनञ्जय चव्हान

(निजी सचिव : गुरुदेव श्री गोयन्काजी)

1. Donations through Core Banking (within India)

Donations to "Global Vipassana Foundation" can now be remitted from anywhere in India through any branch of the Bank of India under core banking system.

Global Vipassana Foundation
Axis Bank India, A/C. NO: 911010032397802
SWIFT CODE: AXISINBB062,
IFSC CODE: UTIB0000062
MICR CODE: 400211011,
BRANCH: Malad west branch
ADDRESS: Sonimur Apartment,
1st Floor, Malad Timber Estate,
Malad West, Near BATA Showroom ,
S.V. Road, Malad (West), Mumbai 400064

2. Donations from Outside India can be remitted through SWIFT transfer to Bank of India

SWIFT Transfer details are as follows:
Name of the Bank : J P Morgan Chase Bank
Address : New York, US,
A/c. No. : 0011407376, Swift: CHASUS33.

साधकों के उद्‌गार

मैंने पहली बार मई २००२ में दस-दिवसीय विपश्यना शिविर में भाग लिया। प्रारंभ में कुछ दिनों तक यह ध्यान बहुत ही कठिन लगा। लेकिन फिर भी ये दस दिन व्यर्थ नहीं गये। मेरे जीवन के बहुत से क्षेत्रों में मुझे इससे बहुत लाभ हुआ। विपश्यना ध्यान करके मैं एक अच्छा मुसलमान हो गया, एक अच्छा डॉक्टर तो हुआ ही, एक अच्छा पिता और अच्छा मनुष्य बन गया। मैं अब बहुत खुश रहने लगा हूं और मेरी मानसिक स्थिति संतुलित है।

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

मैंने दूसरा दस-दिवसीय शिविर अक्टूबर २००८ में किया। इस बार यह आसान ही नहीं लगा, इसमें बड़ा आनंद भी आया। पहले दिन से ही अच्छा लगा। ध्यान सिखाने की सारी व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी, अनुशासित थी।

विपश्यना वर्तमान में रहना सिखाती है और यह भी सिखाती है कि जीवन में जो आये उसे स्वीकारना चाहिए। हमारी बहुत सी समस्याओं की जड़ हमारे अवचेतन मन में जमा कूड़ा-कचरा है। विपश्यना से इसे साफ किया जा सकता है और हम लोग संतुष्ट और अर्थपूर्ण जीवन जी सकते हैं।

सभी धर्म तो यही सिखाते हैं कि लालच मत करो, क्रोध मत करो, दया करो, सहिष्णु और विनम्र बनो। लेकिन ऐसा करना आसान नहीं, बहुत ही कठिन है। विपश्यना सिखाती है कि इन गुणों को हम अपने में कैसे विकसित कर सकते हैं।

डॉ. नौशादअली मोतीवाला

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1-2. Mr. Rudy & Mrs. Sophia Wisener
To assist centre teachers of Dhamma Mahavana

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती अर्चना मानपुरे
२. सुश्री कल्पना सोमकुँवर
३. डॉ. गुणवंती गडा
४. वकील उमा मुंदड़ा

नवनियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री राजीव चौधरी, इंदौर
२. श्रीमती रविकांता कोटंगळे, तुमसर
3. Mrs. Sauwanee Kunjara, Thailand
4. & 5. Mr. Teno Sanchez & Mrs. Esperanza Ballve, Argentina
6. Mrs. May Dean, USA

बालशिविर शिक्षक

१. सुश्री रोली बाजपेयी, ठाणे
२. श्री अमित मित्तल, नई दिल्ली
३. श्रीमती विद्या पई, मुंबई

दोहे धर्म के

धर्म न हिंदू बौद्ध है, धर्म न मुस्लिम जैन।
धर्म चित्त की शुद्धता, धर्म शांति सुख चैन॥
संप्रदाय ना धर्म है, धर्म न बने दिवार।
धर्म सिखाए एकता, धर्म सिखाए प्यार॥
जाति वर्ण का गोत्र का, चढ़ा शीश अभिमान।
शुद्ध धरम को छोड़कर, भटक गया नादान॥
जब जब मनुज समाज में, जातिवाद बढ़ जाय।
तब तब मंगल धरम के, सुमन सभी कुम्हलायँ॥
बँधे जाति से वर्ण से, तो हो धर्म मलीन।
संप्रदाय से जब बँधे, होय धर्मबल क्षीण॥
जात-पांत के फेर में, छुटा धरम का सार।
सार छुटा निस्सार ही, बना शीश का भार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

प्रग्या सील समाधि ही, सुद्ध धरम रो सार।
काया वाणी चित्त रा, सुधरै सै ब्योहार।।
रंग गाय रो भिन्न है, दूध भिन्न ना होय।
संप्रदाय होवै जुदा, धरम जुदा ना होय।।
जात वरण रो, गोत रो, जठै भेद ना होय।
जो सैं को मंगळ करै, धरम सांचलो सोय।।
संप्रदाय तो मोकळा, धरम सदा ही एक।
नद नाळा तो अणगिणत, समदर जळरस एक।।
बिना सील पालण कर्यां, सुद्ध समाधि न होय।
बिन समाधि प्रग्या नहीं, मुक्ति कठै स्यूं होय?
प्रग्या सील समाधि ही, मंगळ रो भंडार।
सै सुख साधणहार है, सै दुख टाळणहार।।

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष** 2555, **आश्विन पूर्णिमा,** **11 अक्तूबर, 2011**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org